पिक्चर बुक को जानने समझने के बहाने....

रेलगाड़ी चली छुक छुक और वॉकिंग स्टिक की टेस्टिंग

दीपाली शुक्ला

पिक्चर बुक यानी चित्रों के जरिए बनती कहानी। एक कहानी और एक से ज़्यादा कहानी भी। या कहें कि हर पन्ने पर एक नई कहानी भी। पिक्चर बुक के प्रति बच्चों की सोच को जानने-समझने की दृष्टि से 27 मई 2014 को — आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल और एकलव्य का समर कैम्प — बच्चों के साथ कहानी सुनाने और पिक्चर बुक पर बात की गई।

यह इसलिए भी किया गया क्योंकि एकलव्य भी लम्बे समय से पिक्चर बुक को प्रकाशित करने के बारे में विचार कर रहा है। पर अभी तक किसी खास विषय या थीम को पहचान कर अन्तिम रूप देने का काम नहीं हो सका है। इसलिए हमारी अपनी समझ को विकसित करना भी एक उद्देश्य था। एक सवाल यह भी था कि क्या पिक्चर बुक छोटे बच्चों को ही आकर्षित करती है या फिर थोड़े बड़े बच्चे जो लिपि से वाकिफ हो रहे हैं वो भी इस तरह की सामग्री के प्रति रुचि दिखाते हैं।

कहानी सुनाने के सत्र के लिए पिक्चर बुक ***रेलगाड़ी चली छुक छुक*** को चुना गया। साथ ही विचारण के लिए आई एक पिक्चर बुक ***वॉकिंग स्टिक*** को भी चर्चा के लिए रखा गया।

आनंद निकेतन डेमोक्रेटिक स्कूल: यहां मिश्रित आयु वर्ग के बच्चे थे। 3 साल से लेकर 13 साल तक के बच्चे। यहां पर जब ***वॉकिंग स्टिक*** को लेकर कहानी सुनाने का सत्र शुरू किया तो विषय के प्रति

5 से 9 साल के बच्चों में खासा उत्साह दिखा। इस दौरान बच्चों ने यह भी साझा किया कि उन्होंने असली घोड़े को देखा है नकली या खिलौने वाले घोड़े पर बैठे भी हैं। इसलिए कहानी में दर्शाई गई घोड़ा छड़ी को जानने समझने में उन्हें कोई मुश्किल नहीं आई। पेज दर पेज कहानी के आगे बढ़ने और कहानी में नए पात्रों के आने, घटनाक्रम के बदलने, अपनी सोच से उसमें कुछ नया जोड़ने में बच्चों को आसानी हो रही थी। मज़े की बात चित्रों को बच्चों ने अपने

अंदाज़ में देखा और उसे नाम दिया। मसलन, पहाड़ और नदी के दृश्य को कुछ बच्चों ने चिड़िया कहा। इसी तरह हवाई जहाज़ को भी बच्चों ने पक्षी माना।

एक चीज़ जिसे बच्चों ने सबसे ज़्यादा पसन्द किया वह था, हाथी और चूहे का एक साथ हवाई जहाज़ में बैठना। हालांकि बड़े बच्चों को वॉकिंग स्टिक के मिलने पर विदेश जाने की कल्पना ने ज़्यादा रोमांचित किया।

कहीं-कहीं चित्रों की गहरी रंगत के कारण बच्चों को कुछ दुविधा हो रही थी। और वो चित्र को सही रूप में समझ नहीं पा रहे थे।

विंड मिल और ऐंटीना को लेकर हुई चर्चा खासी बढ़िया थी। दरअसल बच्चों के लिए यह दोनों ही एक समान काम करती हैं। जिस तरह विंड मिल से बिजली पैदा होती है उसी तरह ऐंटीना से भी बिजली पैदा होती है।

कहानी के अन्त के बारे में हालांकि बच्चों ने कुछ खास कहा नहीं। इसके बाद कुछ बच्चों ने खुद कहानी बनाने की कोशिश की।

एकलव्य का ईश्वर नगर स्थित समर कैम्प: यहां पर प्राइमरी कक्षा के बच्चों के साथ सबसे पहले ***रेलगाड़ी चली छुक छुक*** नामक पिक्चर बुक पर कहानी सुनाई गई। बच्चों ने पात्रों के साथ अपनी रेलयात्रा को जोड़ा और अपने अनुभवों के आधार पर कहानी को आगे बढ़ाया। रेल की यात्रा के दौरान सबसे ज़्यादा रोमांचक जो बच्चों को लगा वह था खिड़की वाली सीट पर बैठकर बाहर के दृश्यों को देखना। रेलगाड़ी से उन दृश्यों को ताकने के लिए उस सीट को भी बच्चे कभी छोड़ना ही नहीं चाहते।

कहानी सुनाने के दौरान ही बच्चों ने रेलगाड़ी के सीधे और उलटे चलने पर बात की। वास्तव में बच्चे इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि गाड़ी के आने-जाने की दिशा कैसे होती है। इस पर चर्चा चल ही रही थी कि गाड़ी के उलटी चलने का मसला आया फिर तो बच्चों ने उलटी रेलगाड़ी को धकियाने के लिए हज़ारों और लाखों की संख्या में लोगों को लाने और गाड़ी को गंतव्य तक पहुंचने में लगने वाले दिनों के बारे में भी सोच लिया। इस पिक्चर बुक में बच्चों को खासा आकर्षित खिड़की से दिखने वाले बाहरी नज़ारों ने किया।

इस चर्चा के बाद ***वॉकिंग स्टिक*** पर कहानी का सत्र शुरू हुआ। इस कहानी ने शुरूआत से ही बच्चों को बांधा। खास तौर से घोड़े वाली छड़ी और कहानी के पात्र का बादलों में सैर करना। बच्चों ने आसमान से दिखने वाले नज़ारों, रेलगाड़ी की दौड़ पर काफी बात की। चित्रों को देखते हुए बच्चों ने उन्हें अपने-अपने तरीकों से परिभाषित किया। मसलन बंदर के हाथ में किताब है वह किताब देने आया है। पवन चक्कियों की तुलना आटा चक्की से की गई। फिर आटा चक्की के अपने अनुभव बच्चों ने बताए। कि वो गेहूं लेकर अकेले चक्की तक जाते हैं। छत पर लगे एंटीना को इन बच्चों ने न केवल आसानी से पहचाना बल्कि उसके बारे में बताया भी। इतना ही नहीं इन बच्चों ने टीवी के कार्यक्रमों और पिछले दिनों की चुनावी हलचल पर भी बात की।

बच्चों ने कहानी के अन्त पर भी अपनी राय रखी। जैसे, जो कुछ किया उसे रिकार्ड कर टीवी पर देख रहा है। वह टीवी देखकर कल्पना कर रहा है। इस तरह के पात्रों को बच्चों ने तलाशने का भी प्रयास किया। उदाहरण के लिए, छोटा भीम में एक पात्र के पास घोड़ा है। इतना ही नहीं घोड़ा छड़ी के खेल के बारे में बच्चों ने बताया।

दो अलग जगहों पर चर्चा के बाद हमें कुछ सुराग मिले जो यह बताते हैं कि चित्रों में नयापन बच्चों को सहज ही आकर्षित करता है। चित्रों में बहुत ज़्यादा एलीमेंट भी बाधक नहीं बनते तब जब बच्चा उनसे परिचित हो। पारम्परिक तरीके के चित्रों की खूबसूरती बच्चे को कहानी गढ़ने के मौके देती है लेकिन कुछ हद तक सीमित भी करती है। इसी तरह बच्चों के चितपरिचित पात्र उन्हें कहानी को विस्तार देने में मदद करते हैं।